1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के कारण
या
निबन्ध लिखें।

भारत के इतिहास में 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन महत्वपूर्ण स्थान रखता है सर स्टेफोर्ड क्रिप्स का भारत आगमन यहाँ के संवैधानिक समस्याओं को दूर करने में एक प्रयास था जो असफल रहा क्योंकि उनका प्रस्ताव किसी भी राजनीतिक दल को भिन्न-भिन्न कारणों से मान्य नहीं हुआ इस योजना की असफलता ने भारत की ब्रिटिश सरकार और कॉंग्रेस के बीच खाई को चौड़ा कर दिया। गाँधी जी ने कॉंग्रेस को एक नया कार्य क्रम दिया जिसे भारत छोड़ो आन्दोलन कहा जाता है इस आन्दोलन का उद्देश्य था अंग्रेजों को भारत

छोड़ने के लिए विवश करना। उन्होंने अंग्रेजों को भारत से केवल भारत के हित के लिए ही नहीं बल्कि अपने हित के लिए भी चले जाने के लिए कहा "हरिजन" नामक पत्र में उन्होंने ने अपनी विचारधारा स्वतंत्र रूप से व्यक्त किया किन्तु सरकार पर उनका कोई असर नहीं पड़ा सरकार कॉंग्रेस को कुचलने में ही अपना स्वार्थ देखती थी।

भारत छोड़ो प्रस्ताव —→ कॉंग्रेस का अधिवेशन बम्बई में 7 अगस्त 1942 को शुरू हुआ 8 अगस्त को गाँधी जी ने भारत छोड़ो का प्रस्ताव रखा

कांग्रेस समिति ने प्रस्ताव को पारित किया [illegible]
की कि मित्र राष्ट्रों एवं भारत के लिए यह आवश्यक है
कि यहाँ ब्रिटिश शासन का अन्त हो। सरकार यदि भारत
को स्वतंत्र नहीं करती है तो गांधी जी के नेतृत्व
अहिंसात्मक आन्दोलन चलाने का निर्णय कांग्रेस ने लिया
है। कांग्रेस कार्य-समिति ने जनता को करो और मरो
"Do and die" का नारा दिया। अपने 70 मिनट के
भाषण में गांधी जी ने यह बताया कि आजादी सभी
जनता को होगी और सत्ता पर अधिकार जनता का
होगा। अतः सभी इस आंदोलन में अहिंसक तरीके
से भाग लें।

सरकार ने कोई समझौता नहीं किया बल्कि 9
अगस्त 1942 को सूर्योदय से पहले गांधी जी एवं
कांग्रेस के सभी कार्यकर्ता को गिरफ्तार कर लिया
और कांग्रेस को गैरकानूनी संगठन घोषित कर दिया
सभा और जुलूस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
कांग्रेस के दफ्तरों में ताला लगा दिया।

अंग्रेजी सरकार के दमन कार्य
नीति ने जनता को उत्तेजित कर दिया। जनता तोड़-
फोड़ करने लगी। रेलवे और पुलिस थानों को
कई जगह जला दिया गया पूरा देश विद्रोह की
आग में जलता रहा। एक सप्ताह तक तो शासन
ठप रहा, छात्रों, मजदूरों ~~विद्रोह की आग में~~
~~जलता रहा~~ औरतों किसानों और आम जनों

शुक्रवार 1

महिलाओं ने अपने जुलूसों से सड़कों और गलियों को
भर दिया। हर जगह से आवाज गूँजती थी - "अंग्रेज
भारत छोड़ो" गाँधी जी को मुक्त करो। अंग्रेजी
सरकार ने इस नारे का जवाब लाठियों और गोलियों से
दिया। सम्पूर्ण आन्दोलन, शान्तिपूर्ण जुलूस से आरम्भ हुआ
था लेकिन अंग्रेजों की हिंसक नीति के कारण आन्दोलन
भी हिंसक हो गया। सरकारी सूत्रों के अनुसार 538 जगह
पर सरकार ने गोलियाँ चलायीं कई जगह हवाई जहाज
तथा मशीनगन से गोली वर्षा किया दो महीना तक
सारा देश विद्रोह में रहा लगभग 1028 व्यक्ति मारा गया
तथा 3215 लोग घायल हुआ। एक लाख लोग बन्दी
बनाये गये. महिलाओं की इज्जत लूटी गई पुरुषों को
पीटा गया लाखों की सम्पत्ति लूट ली गई

शनिवार 2

गाँधी जी जेल के
अन्दर काफी दुखी थे वे सरकार की सारी घटनाओं के
न्यायिक जाँच की माँग की किन्तु सरकार अगस्त
प्रस्ताव वापस के लिए दबाव बनाया। काँग्रेस ने सरकार
से कहा कि काँग्रेस कार्यकारणी के सभी सदस्यों को
बिना शर्त रिहा किया जाए तब प्रस्ताव वापस लेने पर
विचार किया जाएगा अन्त में गाँधी जी ने 10
फरवरी 1944 को बारह दिनों के लिए उपवास शुरू
किया तेरह दिनों के बाद इनकी हालत बिगड़ गई
सरकार ने विचार किया कि गाँधी को छोड़ने से

3 रविवार

कोई खतरा नहीं है तब उन्हें जेल से मुक्त कर दिया

महत्व → यद्यपि यह कहा जाए कि 1942 का आन्दोलन असफल रहा लेकिन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में इसके महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। यह आन्दोलन अंग्रेजों के लिए भी मंहगा पड़ा ब्रिटिश सरकार को यह मालूम पड़ गया कि भारतीय जनता में कितना अधिक असंतोष है और उनके भीतर कितनी स्वतंत्रता की उमंग है। यह भी सरकार को ज्ञात हो गया कि राजनीति रूप से जगी भारतीय जनता को अंग्रेजी सरकार कुचलकर नहीं रख सकती। इस आन्दोलन ने सरकार को

4 सोमवार

कई कठिन कदम उठाने के लिए विवश किया विश्व के कई देशों को भारतीय असंतोष की जानकारी मिला और सहानुभूति भी मिलने लगी